VETERINARY TODAY INTERNATIONAL
ISSN 2583-8288

गाय के थन फिस्टुला का शल्य-प्रबंधन एवं पश्चात देखभाल : एक प्रकरण

हषाा साहु, अमन फतवारी, रेखा पाठक

शल्य चिकित्सा विभाग, आई.वी.आर.आई., इज़्ज़तनगर, बरेली (उ.प्र.) – 243122

Corresponding author: Harsha Sahu (harshasahu676@gmail.com)

DOI:10.5281/Vettoday.18099106

केस का इतिहास (Case History)

7 वर्षीया गीर नस्ल की गाय, जिसने ६ दिन पहले बयाई की थी, को गाँव की भैंसों ने सींग मारकर घायल कर दिया। चोट मुख्य रूप से आगे के बाएँ थन पर लगी, जिससे थन में एक छिद्र बन गया और वहाँ से दूध रिसने लगा। इसके अतिरिक्त, जाँच के दौरान यह भी पाया गया कि लगभग 20 दिन पुराना घाव फाइब्रोसिस के कारण सख्त हो चुका था। गाय को दूध के नुकसान और संक्रमण के खतरे को देखते हुए भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान के पॉलीक्लिनिक में लाया गया। जाँच के दौरान यह पाया गया कि थन में बने इस असामान्य छिद्र से लगातार दूध का रिसाव हो रहा है, जिससे न केवल दूध की हानि हो रही थी बल्कि संक्रमण (Mastitis) का खतरा भी बढ़ गया था। गाय हाल ही में ब्याई होने के कारण उसकी दुग्ध उत्पादन क्षमता उच्च थी, और यदि समय पर उपचार न किया जाता तो चौथाई का स्थायी रूप से नुकसान होने की संभावना थी।

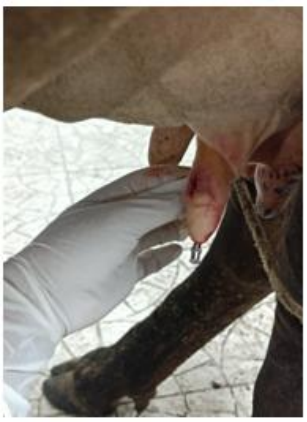
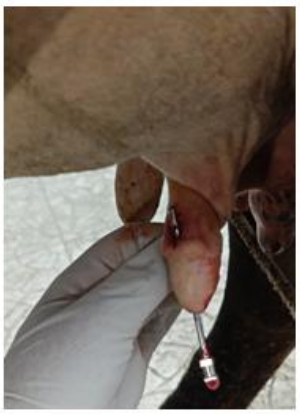

जाँच

शारीरिक जाँच में गाय की सामान्य शारीरिक स्थिति संतोषजनक थी, शरीर का तापमान, नाड़ी एवं श्वसन सामान्य सीमाओं में थे। प्रभावित थन में एक छोटा छिद्र दिखाई दे रहा था जिससे दूध बाहर आ रहा था। छिद्र के किनारे कठोर और अधिक सूजन नहीं थी, जिससे यह स्पष्ट था कि चोट पुरानी थी। कैलिफ़ोर्निया मैस्टाइटिस टेस्ट द्वारा दूध की जाँच में हल्का संक्रमण पाया गया, परंतु कोई गंभीर जटिलता नहीं थी।

निदान : इतिहास और क्लिनिकल जाँच के आधार पर इस केस को थन फिस्टुला के रूप में निदान किया गया।

थन की फिस्टुला – परिचय

गायों में थन से संबंधित रोग दुग्ध उत्पादन और पशु स्वास्थ्य की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण माने जाते हैं। इनमें से एक सामान्य किंतु जटिल समस्या थन फिस्टुला है। थन फिस्टुला का अर्थ है: थन की सतह पर एक असामान्य छिद्र या मार्ग, जिसके माध्यम से दूध सामान्य दुग्ध नलिका के बजाय सीधे बाहर रिसने लगता है। यह स्थिति प्रायः किसी आघात, चोट, काटने, नुकीली वस्तु से लगने वाले घाव या पशुओं के आपसी संघर्ष के कारण उत्पन्न होती है। कभी-कभी लंबे समय तक अनदेखी रहने वाले थन संक्रमण या गलत दुहाई की आदतों से भी थन की त्वचा और नलिका कमजोर होकर फिस्टुला का रूप ले सकती है। थन फिस्टुला प्रायः प्रारंभ में एक छोटा छिद्र होता है, परन्तु लगातार दूध के रिसाव और दुहाई के दबाव के कारण यह धीरे-धीरे कठोर और पुराना हो जाता है। यह समस्या केवल दूध की बर्बादी ही नहीं करती बल्कि थन को संक्रमण का भी अधिक खतरा बना देती है। प्रभावित गायों में दूध उत्पादन घटने लगता है और कई बार समय से पहले अनुपयोगी करना पड़ता है, जिससे पशुपालक को आर्थिक हानि होती है। थन फिस्टुला का प्रबंधन मुख्यतः शल्य चिकित्सा द्वारा किया जाता है।

मुख्य कारण

1. यांत्रिक चोट – काँटे, तार, सींग या लात लगने से थन पर गहरी चोट।
2. गलत दुहाई तकनीक ज़्यादा दबाव या तेज नाखूनों से दुहना।
3. थन में फोड़ा या अल्सर – फूटने के बाद फिस्टुला का बनना।
4. शल्यक्रिया के बाद जटिलताएँ – थन पर किसी अन्य सर्जरी के बाद छिद्र रह जाना

लक्षण

दुहाई के समय या बिना दुहे दूध का रिसाव।

थन में बार-बार संक्रमण और सूजन।

दूध की मात्रा में कमी।

प्रभावित थन चौथाई का सिकुड़ना या क्षति होना।

रोग की पहचान

थन की शारीरिक जाँच और दूध रिसने वाले छिद्र की पहचान।

दूध में संक्रमण की जाँच हेतु या बैक्टीरियल कल्चर।

फिस्टुला की स्थिति और आकार का निर्धारण।

संरक्षणात्मक उपचार

यदि फिस्टुला बहुत छोटा है और थन की नलिका में संक्रमण नहीं है, तो कभी-कभी केमिकल कैटराइजेशन या स्थानीय दवाओं से छिद्र को बंद करने की कोशिश की जाती है। परन्तु प्रायः यह स्थायी समाधान नहीं होता, इसलिए शल्यक्रिया (Surgical repair) सबसे प्रभावी उपाय है।

1. ऑपरेशन से पहले तैयारी

- गाय को मजबूती से बाँधा गया और प्रभावित चौथाई का दूध पूरी तरह से निकाला गया।
- थन को साबुन और एंटीसेप्टिक घोल से अच्छी तरह साफ किया गया।
- क्षेत्रीय संवेदनहीनता के लिए थन रिंग ब्लॉक और घाव वाले क्षेत्र में लाइन ब्लॉक दिया गया।

2. ऑपरेशन की विधि

- फिस्टुला के किनारों को ताज़ा किया गया।ताकि नया ऊतक भर सके। छिद्र के किनारों पर मृत या संक्रमित ऊतक को हटाया।
- थन भीतरी परत म्यूकोसा को साधारण सतत टाँके (कैटगट 1-0), (जो एक प्राकृतिक, शरीर में घुलने वाला) से बंद किया गया।

- बाहरी त्वचा को इंटरप्टेड टांके (Nylon no. 1 शरीर में न घुलने वाला)) से सील किया गया।
- थन में टीट कैनुला डाली गई ताकि दूध आसानी से निकल सके और टांकों पर दबाव न पड़े।

2. ऑपरेशन के बाद देखभाल

- 5-7 दिन तक एंटीबायोटिक (5 gm पेनिसिलिन-स्ट्रैप्टोमाइसिन) और दर्द निवारक दवा 3 दिन (मेलोक्सिकैम 10 ml) दी गईं।
- प्रभावित चौथाई में एंटी-इंफ्लेमेटरी डाला गया।
- 10-12 दिन बाद टांके हटाए गए।
- दूध निकालने की प्रक्रिया सावधानी से की गई और हर दुहाई के बाद एंटीसेप्टिक घोल से सफाई की गई।

परिणाम

दो सप्ताह बाद फिस्टुला पूरी तरह से ठीक हो गया और दूध का रिसाव बंद हो गया। पुराने कठोर घाव की भी सही तरह से भराई हुई और संक्रमण का कोई लक्षण नहीं रहा। प्रभावित चौथाई ने सामान्य दुग्ध उत्पादन फिर से शुरू कर दिया।

निष्कर्ष

थन की फिस्टुला का शीघ्र और सही उपचार आवश्यक है ताकि दूध की हानि और मास्टाइटिस से बचा जा सके। शल्यक्रिया से अधिकांश मामलों में अच्छे परिणाम मिलते हैं, बशर्ते ऑपरेशन के बाद की देखभाल सही तरीके से की जाए।